घर पिछवाड़ा मुर्गी पालन
(Back Yard Poultry)

भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में घर के पीछे मुर्गी पालन का कार्य सदियों से की जा रही है। मुर्गी के रखरखाव में महिलाओं की भूमिका अहम् रही है। सर्वेक्षण से पता चला है कि झारखण्ड, बिहार आदि राज्यों में मुर्गी पालन का कार्य मूलतः महिलाओं के हाथ में है। घर के पिछवाड़े अधिकांशतः ग्रामीण परिवारों में आवश्यकतानुसार 5 – 10 की संख्या में मुर्गी पालन स्वतंत्र विधि से करते हैं जो काफी लोकप्रिय है परन्तु घर के पीछे मुर्गी पालन को अगर थोड़ा ध्यान दे कर वैज्ञानिक तरीकों से किया जाय तो उससे महिलाएँ या रोजी रोटी हेतु पलायन करने वाले व्यक्तियों के आमदनी का एक अच्छा श्रोत बन सकता है।

कृषि कार्यो में ग्रामीण महिला पुरूष को मौसमी रोजगार के बाद वर्ष के शेष दिनों कार्य हेतु अन्य जिलों एवं राज्यों में पलायन करते हैं।

यदि कोई परिवार के घर पिछवाड़ा हेतु विकसित की गई 30 मादा उन्नत नस्ल के मुर्गी पालन स्वतंत्र विधि से करे तो उनसे 25 अण्डा से प्रतिदिन 125 रूपये की आय के रूप में प्राप्त हो सकेगा। जो उनके सामाजिक आर्थिक एवं जीवन को सुरक्षा प्रदान करेगा। क्योंकि ये विकसित मुर्गियाँ कुड़े करवट पर पालने वाली मुर्गियों के समान आवश्यक गुणों से परिपूर्ण, शारीरिक वजन अधिक, मजबूत पंखों वाली, रंगीन पंक्षी, स्थानीय वातावरण में स्वंय को अनुकूल रखना, रोग प्रतिरोधी क्षमता अधिक, वार्षिक अण्डा उत्पादन औसत 200 अण्डा प्रति मुर्गी, अण्डा का रंग भूरा 50 ग्रा0 का पाया जाता है। घर के पीछे मुर्गी पालन के लिए उपयुक्त उत्पादन वाले चार प्रकार के नस्ल विकसित किया गया है, जो तीन प्रकार के हॉली क्रॉस कृषि विज्ञान केन्द्र हजारीबाग में उपलब्ध है। ये सभी नस्ल कुड़े–करकट पर पल कर अच्छा उत्पान देते हैं। जिस प्रकार देशी मुर्गियों को पाला जाता है, उसी प्रकार इसे भी पाला जाता है और परिणाम तीन से चार गुणा ज्यादा देती है। मांग ज्यादा है।

1. कैरी निर्भिक (CARI NIRBHIK)

यह असील की भारतीय देशी नस्ल और दलहम रेड विदेशी से विकसित है। ये देश की विभिन्न जलवायु वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है, इन पंक्षियों को 50 प्रतिशत देशी मुर्गी और 50 प्रतिशत विदेशी मुर्गी एवं अन्य विशेषताओं को मिला कर तैयार किया गया है, जो घर के पिछवाड़ा मुर्गी पालन के लिए चाहिए। ये मुर्गियों बिल्कुल देशी मुर्गियों के समान दिखाई देती है। मुर्गी लाल रंग के एवं अण्डा भूरा रंग का 50 ग्रा0 तक होता है। खराब आहार एवं प्रबंधन परिस्थितियों के बावजूद भी इनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक तथा स्वयं जीवन पालन करने में सक्षम होती है। यह लड़ाकू प्रवृति होने के कारण अपने दुश्मनों से स्वयं सामना भी कर लेता है। ये मस्तानी चाल में चलते हैं, स्वादिष्ट मांस के लिए प्रसिद्ध है। इनके नर का शारीरिक वजन 5 माह में 2 कि0ग्रा0 का एवं मादा 1.5 कि0ग्रा0 के लगभग हो जाती है। मुर्गियाँ 174 दिन में परिपक्व हो कर अण्डा देने लगती है। अण्डा का उत्पादन औसतन 180 अण्डा प्रति मुर्गी प्रति वर्ष है। मादा पक्षी 88 प्रतिशत तक अण्डा देती है, और उनसे 81 प्रतिशत तक चूजा तैयार होता है, जबकि 6 माह उम्र के बाद 90 – 95 प्रतिशत पंक्षी जीवित रहते हैं।

2. कैरी श्यामा (CARI SHYAMA)

यह भारतीय देशी नस्ल कड़कनाथ एवं विदेशी नस्ल दलहम रेड के संकरण से विकसित की गई है। यह कई रंगों में परन्तु काली रंगी की अधिकता होती है। इनका त्वचा, पंजा, टाँग गहरे भूरे या काले रंग इसलिए होता है कि इनके मांस के उत्तकों में मेलानिन रंग द्रव्य जमा होता है, जिसके कारण मांस में प्रोटीन की मात्रा अधिक एवं वसा या मांसल रेशा कम होता है। इस नस्ल के नर 5 माह के उम्र पर 1500 ग्रा0 एवं मादा 1120 ग्रा0 की हो जाती है। परिपक्वता 170 दिनों में हो जाती है और वार्षिक अण्डा उत्पादन 210 औसतन प्रति पक्षी अण्डा उत्पादन 85 प्रतिशत एवं चूजा 82

प्रतिशत तक निकलते है। 6 सप्ताह बाद जीवन यापन 90 – 95 प्रतिशत तक हो जाता है। इनके मांस या अण्डा खाने से श्वंसन रोग को नियंत्रित रखता है। सभी वातावरण के लिए अनुकूल नस्ल है।

3. उपकारी (UPCARI)

यह नस्ल भारतीय देशी नस्ल उल्टा पंख वाली फ्रिजिल एवं दलहम रेड मुर्गी के संकरण से तैयार किया गया है। ये बहुरंगी होते हैं। एकल कंलगी तथा मध्यम आकार के होते हैं। उल्टा पंख होने कारण इन पंक्षियों के शरीर से तेजी से गर्मी निकल जाती है जिसके कारण ये मुर्गियां उष्ण कटिबंधीय जलवायु विशेषकर शुष्क क्षेत्रों के लिए उपयुक्त होती है। इनकी विशेषताएँ 20 सप्ताह में शारीरिक भार 1285 ग्रा0। अण्डा देना शुरू 165 दिन में कर देती है, 220 अण्डा प्रतिवर्ष प्रति मुर्गी है। जनन क्षमता 90 प्रतिशत तक है।

ग्रामीण क्षेत्रों में उपरोक्त उन्नत नस्लों वाली 30 मुर्गियों यदि कोई व्यक्ति पालन करता है, तो उसे 25 अण्डा प्रतिदिन प्राप्त होगा। जिससे 100/– प्रतिदिन आमदनी होगी, जो वर्ष में 36500/– आय होगा। यदि योजना बनाकर ग्रामीण वासियों में यह कार्यक्रम चलाया जाता है तो निश्चित ही रोटी रोजगार के तलाश में पलायन करने वाले भाईयों को रोका जा सकता है। साथ ही स्वयं सहायता समूह की बहनें अपनी आय का अतिरिक्त श्रोत बना सकती है या गांवों में कुपोषण के शिकार होने वाले शिशुओं को रोका जा सकता है।

घर पिछवाड़ा 30 मुर्गियों के लिए आवास की व्यवस्था :–

ऊंचा स्थान में घर : 7 फीट लम्बा 6 फीट चौड़ा एवं 5 फीट ऊंचा मिट्टी दीवाल में अगल बगल खिड़की (2 फीट x 1½ फीट) रखें। आगे छोटा सा दरवाजा (3 फीट x 2 फीट) का हो तथा शेड एस्बेस्टस शीट से ढ़क कर तैयार करें। इसमें कृषक को श्रमदान से दीवाल तैयार करें।

शेष एस्बेस्टस 12' X 5', रू0 700/– में तथा जाली दरवाजा रू0 300/– इस प्रकार कुल रू0 1000/– मात्र में आवास तैयार हो जाएगा।

4. मुर्गियों की खान पान की व्यवस्था :–

वैसे तो ये मुर्गियाँ दिन भर चर कर अपना जीवन यापन कर लेती है। बरसात के दिनों में आहार की कमी हो जाती है, क्योंकि उस समय कोई फसल की कटाई नहीं होती है, वैसी स्थिति में कुछ पूरक आहार देना चाहिए। जब 30 – 40 की संख्या में एक ही गाँव में कई किसान रखे हुए हैं, तो उन्हें केचुआ पूरक के आहार में दें या अजोल्ला फर्न है, जो जल में तैरता है। उसकी खेती छाया में गढ़ा खोद कर खाद पानी देकर तैयार कर खिलाया जा सकता है। जो पूरक आहार के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह बहुत आसानी से पच जाता है, तथा सुखा – अजोल्ला में 25 से 35 प्रतिशत प्रोटीन, 10 – 15 प्रतिशत खनिज 7 – 10 प्रतिशत अम्ल कम्बिनेशन पाया जाता है, कार्बोहाइड्रेट और तेल भी कम मात्रा में पाया जाता है।

5. मुर्गियों की स्वास्थ्य रक्षा :–

इन मुर्गियों में मुख्यतः रानी खेत रोग, चेचक, अंत–परजीवि (कृमि) का प्रकोप देखने को मिलता है। रानी खेत रोग जो एक भयंकर छुआछुत रोग होता है और मृत्यु दर शत–प्रतिशत तक हो जाती है। इसके बचाव के उपाय के लिए हॉली क्रॉस कृषि विज्ञान केन्द्र हजारीबाग में टीका देकर ही किसानों को दो माह उम्र के बाद आपूर्ति करता है। चेचक का भी बचाव टीका से किया जाता है। चूँकि ये मुर्गियाँ स्वतंत्र विधि में चराई पर रहती है, उस दौरान कृमि का प्रकोप हो जाने पर अण्डा का उत्पादन कम हो जाता है। इसलिए 2 – 3 माह के अंतराल पर कृमि नाशक दवा, पिपराजीन द्रव – 15 मि0ली0/ 25 मुर्गियों (डेढ़ माह से उपर) 1 ली0 पीने के पानी में सुबह पहला पानी में दें। जिस दिन सुबह दवा

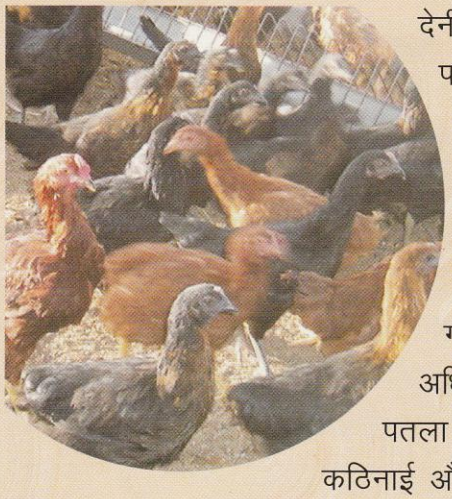

देनी हो इसके पहले रात में ही पानी का बर्तन हटा दें।

कभी–कभी मुर्गियों में ई–कोलाई नामक जीवाणु का प्रकोप हो जाता है, क्योंकि ये मुर्गियाँ नाली, गढ़ा का जमा हुआ पानी अधिकांशतः पीती हैं, जिससे पतला दस्त, स्वांस लेने में कठिनाई और कुछ ही दिनों बाद मर जाती है। सिप्राजोल टी पाउडर – 1 ग्राम प्रति लीटर पीने के पानी में मिलाकर 3 दिन तक दें।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर ग्रामीण पुरूष/महिलाएँ 30–30 उन्नत नस्ल की मुर्गियाँ पाल कर 36,500/– रूपये की अतिरिक्त आय प्रति वर्ष कमा सकती हैं।

6. प्राप्ति श्रोत :–

हॉली क्रॉस कृषि विज्ञान केन्द्र, हजारीबाग में समय–समय पर केन्द्रीय पंक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली से एक दिन का चूजा लाकर दो माह तक पालन के दौरान सभी आवश्यक टीका लगा कर उपलब्ध कराया जाता है। विशेष जानकारी के लिए हॉली क्रॉस कृषि विज्ञान केन्द्र, हजारीबाग में सम्पर्क कर सकते हैं।

आलेख

डी. रॉय

पशुपालन विभाग,
हॉली क्रॉस कृषि विज्ञान केन्द्र,
हजारीबाग